डॉ जीतेंद्र कुमार होता
सहायक प्राध्यापक (भूगोल)
भूगोल विभाग, दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़)

भूगोल का अर्थ (Meaning of Geography)

भूगोल संस्कृत शब्द से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ दो शब्दों से मिलकर बना है भू का अर्थ पृथ्वी या धरातल और गोल का अर्थ वृत्ताकार से है। तात्पर्य पृथ्वी का आकार गोल से है। यह (Geography) शब्द यूनानी भाषा के दो शब्दों ज्यो (Geo) और (Graphy) से मिलकर बना है जिसमें (Geo) का अर्थ पृथ्वी और (Graphy) का अर्थ वर्णन करना है। इस प्रकार शाब्दिक दृष्टि से ज्योग्राफी का अर्थ पृथ्वी का वर्णन करने वाला विज्ञान होता है। स्ट्रेम्ब्रिज के अनुसार भूगोल धरातल की ऊँचाई, चट्टानों की बनावट और पृथ्वी की जलवायु या इनके सम्मिलित प्रभाव (जो प्राकृतिक वनस्पति उपज और विशेष रूप से मनुष्यों के कार्यो पर पड़ता है) की विवेचना करता है। भूगोल केवल वितरण का विवरण नहीं है बल्कि इसमें विभिन्न प्राकृतिक तत्वों के पारस्परिक प्रभाव का भी सूक्ष्म अध्ययन है। भूगोल पृथ्वी से संबन्धित जल, स्थल एवं वायु मंडल का अध्ययन है।

भूगोल की प्रमुख शाखा भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल है। जिसमें भौतिक भूगोल की उपशाखाओं में भू आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान, जल विज्ञान, समुद्र विज्ञान, जैव भूगोल, पादप एवं मृदा भूगोल, पर्यावरण भूगोल, पारिस्थितिकी भूगोल है। मानव भूगोल की उपशाखा में सांस्कृतिक भूगोल, आर्थिक भूगोल, सामाजिक भूगोल, राजनीति भूगोल, जनसंख्या भूगोल, अधिवास भूगोल, परिवहन भूगोल, वाणिज्य भूगोल, ऐतिहासिक भूगोल, प्रादेशिक भूगोल, संसाधन भूगोल इत्यादि हैं। जैव भूगोल में प्राणी जगत, पादप जगत के संबंधों का अध्ययन करते हैं।

अ भौतिक भूगोल की उपशाखाएँ

1. भूआकृतिकविज्ञान (Geomorphology) इसमे स्वरूपों (landforms) की उत्पत्ति, विकास, संरचना, भूपृष्ठ, सत्तलता, असमतलता, जल–नदियों, जन–वनस्पतियों आदि कारकों की दृश्यमानता का विवेचन होता है।

2. जलवायु विज्ञान(Climatology) इसमे वायुमण्डल की स्थिति, मौसम, तापू पर्यावरण, जलवायु के लक्षण तथा मानव और वनस्पति पर इसके प्रभाव का अध्ययन होता है। मौसम विज्ञान (meteorology) में वायुमंडल की तात्कालिक

दशाओं यथा–तापक्रम, वर्षा, हवा, दबाव, आर्द्रता आदि की स्थिति का अध्ययन किया जाता है।

3. जल विज्ञान(Hydrology) इसमे नदियों, झीलों, महासागरों और भूजल की राशियाँ, तंत्र, संचरण आदि का अध्ययन होता है।

4. समुद्र–विज्ञान(Oceanography) महासागरों की लहरों, धाराओं, ज्वार–भाटा, रसातल, उपलब्धि, तापक्रम, वनस्पति, जल–जीव, खनिज, ज्वार–भाटा और तटों का अध्ययन होता है।

5. जैव भूगोल (Biogeography), इसके दो निम्नलिखित उपविभाग हैं– पृथ्वी पर पाए जाने वाले समस्त जीवों अर्थात प्राणी–वनस्पतियों का भौगोलिक क्षेत्रगत अनुकूलन के आधार पर उत्पत्ति एवं उनके सम्पूर्ण जीवन चक्र का अध्ययन करते हैं। वनस्पति भूगोल (plant geography) जन्तु भूगोल (animal geography)

6. मृदा भूगोल (Soil geography) इसमे मिट्टीयों की विशेषताओं और भौतिक, रासायनिक तथा जैविक गुणों का अध्ययन होता है। भूगोल की यह शाखा मृदा–विज्ञान (pedology) नामक एक स्वतन्त्र विज्ञान भी है।

7. पर्यावरण भूगोल (Environment geography) यह पर्यावरण के विभिन्न पक्ष तथा मानवीय क्रियाओं पर उसके प्रभाव का भौगोलिक अध्ययन है जिसमें पर्यावरण के महत्व समस्या तथा उसके निदान के उपाय में विभिन्न नियम अधिनियमों भौगोलिक सूचनाओं तथा भौगोलिक अध्ययन के परिणामों के प्रयोग के लिए किया जाता है।

8. पारिस्थितिकी भूगोल(Ecology) जीवधारियों एवं उनके पर्यावास (habitat) के पारस्परिक क्रिया–कलाप सम्बन्धी का विज्ञान है।

9. भूगणित (Geodesy) के द्वारा पृथ्वी की आकृति, आकार, अवस्थाएँ, ऊंचाइयाँ, क्षेत्रीय दूरी, उत्पलावन और गुरुत्वाकर्षण शक्ति का शुद्ध ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

10. भू भौतिकी (Geophysic) इसमें पृथ्वी और उसके आन्तरिक भागों का अध्ययन, पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र, गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र, पृथ्वी की विद्युत् चालकता, झुम के प्रभाव के अध्ययन, महासागरों तलों, आदि की खोजों के अध्ययन होते हैं।

11. खगोलकीय भूगोल (Astronomical geography) इसमें तारे ग्रहों, सूर्य, चन्द्र, और पृथ्वी के तारे सम्बन्धों का अध्ययन होता है।

12. हिमविज्ञान (Glaciology) में ग्लेशियरों की आकृति, आकार, गति और तंत्र आदि का अध्ययन किया जाता है।

13. स्वास्थ्य भूगोल (Medical geography) यह मानव भूगोल की उप–शाखा है, जिसमें मानव एवं पर्यावरण के बीच परस्पर क्रिया से संबंध का अध्ययन होता है। जो कि मानव स्वास्थ्य, समाज और स्थान को शामिल करते हुए एक समग्र दृष्टिकोण से देखता है। यह बीमारी और स्वास्थ्य देखभाल के अध्ययन के लिए भौगोलिक जानकारी, दृष्टिकोण और विधियों का उपयोग है। चिकित्सा भूगोल, स्वास्थ्य भूगोल का सहयोगी क्षेत्र, प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के संबंध को समझने का विज्ञान है।

14. मानचित्र विज्ञान (Cartography) जिसे कार्टोग्राफी भी कहते हैं। मान–चित्र किसी वास्तविक क्षेत्र को नापकर निश्चित मापनी और प्रक्षेप के अनुसार प्रतीकों और संकेतों का उपयोग करके कागज या समतल सतह पर लघु रूप में चित्रण है। मानचित्र बनाने, उनका अध्ययन करने और उन्हें प्रस्तुत करने की कला, विज्ञान और तकनीक है। इसमें पृथ्वी की सतह तथा खगोलीय पिंड की विशेषताओं को मानचित्रों, चार्टों, मॉडलों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है, जिससे जानकारी को स्पष्ट, आसानी से समझा जा सके।

(ब) मानव भूगोल की उपशाखाएँ

1. सांस्कृतिक भूगोल (Cultural geography) इसमे मानव–निर्मित विशेषताओं यथा–भाषा, धर्म, संस्कृतियाँ, रीति–रिवाज आदि का अध्ययन होता है। यह शाखा संस्कृति मानव विज्ञान (cultural anthropology) से मिलती–जुलती है।

2. जनसंख्या भूगोल (Population geography) केवल जनांकिकी ही नहीं वरन् पृथ्वी–तल के विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या के विभिन्न वितरण, जन्म, आयु–वर्ग, स्त्री–पुरुष अनुपात, विवाह, गाँवों–शहरों में निवास वितरण, जातीयता–प्रसार, वृद्धि और ह्रास आदि जनसंख्या की विशेषताओं, समस्याओं का अध्ययन सम्मिलित रहता है।

3. अधिवास भूगोल (Settlement geography) इसकी दो उपशाखाएँ– ग्रामीण भूगोल (Rural geography), जिसमें ग्राम्य निवास के साथ–साथ ग्रामीण जीवन शैली का अध्ययन होता है। नगरीय भूगोल (Urban geography), जिसमें नगरों के प्रकार, महत्व, कार्यात्मक क्षेत्रों, परिवहन, नगरों की स्वरूपजन्यता, स्थल, क्षेत्रों, आकार, पारिस्थितिक ज्ञान, नगरों के उच्च, विराट नगर, नगरों के क्रम का अध्ययन होता है।

4. राजनितिक भूगोल (Political geography) में संसार के राष्ट्रों के क्षेत्रीय क्षेत्र, विभिन्न सरकारों के अधीन क्षेत्र की सत्ता, सीमाओं का अध्ययन होता है। सैन्य भूगोल में राज्यों की सेनाओं की गतिविधियाँ, युद्ध, सीमा, सीमा–विवाद, युद्धस्थल स्थान और युद्ध की योजना की दृष्टि से भौगोलिक लक्षणों का अध्ययन होता है।

5. ऐतिहासिक भूगोल (Historical geography) में विभिन्न काल–खण्डों में पृथ्वी–उपयोग, मानव–निर्मित रूपान्तरणों के ऐतिहासिक, स्थलाकृतिक, संस्कृति, धरोहर और अन्य के अध्ययन, सांस्कृतिक दृश्य–भूगोल, भूतकालीन भूगोल अतीत भूगोल के पुनर्निर्माण सम्बन्धित भौगोलिक परिवर्तन का अध्ययन होता है।

6. सामाजिक भूगोल (Social geography) पृथ्वी के क्षेत्र, राज्यों, स्थानों एवं सामाजिक समूहों और सांस्कृतिक विशेषताओं के परस्पर सम्बन्धों का विवेचन होता है।

8. प्रादेशीक भूगोल (Regional geography) प्रादेशिक भूगोल पृथ्वी के कोई एक विशिष्ट क्षेत्र का अध्ययन है, जिसमें उस क्षेत्र की अपनी भिन्नता निकट से भौतिक, जलवायु, सांस्कृतिक, जनसंख्या, आर्थिक और राजनीतिक विशेषताओं का अध्ययन एक समग्र इकाई के रूप में रखता हो। यह अपने विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट पहचान और विविधता पर ध्यान केंद्रित करता है, उनकी विशेषताओं की परस्पर क्रिया को समझता है, और धराजल पर घटनाओं के व्यापक वितरण के विशिष्ट भूदृश्यों और संस्कृतियों की अंतर्दृष्टि प्रदर्शित करता है।

9. आर्थिक भूगोल (Economic geography) मानव विश्व के देशों का प्राकृतिक और आर्थिक गतिविधियों कैसे वितरित हैं का अध्ययन करता है। इसके निम्न उपशाखा हैं।

1. कृषि भूगोल (agricultural geography) मानव भूगोल की उप–शाखा है, जो धरातल पर कृषि गतिविधियों के वितरण, स्थान और उनके कारणों का अध्ययन करती है। कृषि और मानव के बीच स्थानिक संबंधों से संबंधित है, जिसमें यह भी देखा जाता है कि कृषि कहाँ, क्यों और कैसे होती है. इसमें कृषि उत्पादन पर मिट्टी, जलवायु और सामाजिक–आर्थिक कारकों के अंतर्संबंध और प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। कृषि व्यापार, समग्र आर्थिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

2. व्यापार भूगोल या वाणिज्य भूगोल (commercial geography) मानव भूगोल या आर्थिक भूगोल की एक शाखा मानी जाती है, जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण, उपभोग और व्यापार के स्थानिक अध्ययन से संबंधित है। जिसमें व्यापार और लेन–देन की स्थानिक विशेषताओं व्यापार के प्रकृति, कारणों और परिणामों के संदर्भ में सभी गतिविधियाँ भौगोलिक कारकों से प्रभावित होने का खोज करता है।

3. विनिर्माण–उद्योग या औद्योगिक भूगोल (industrial geography) औद्योगिक भूगोल में उद्योगों के भौगोलिक वितरण, कच्चे माल की प्राप्ति, उत्पादन की

समस्याओं, और तैयार उत्पादों के वितरण का अध्ययन किया जाता है।यह विनिर्माण उद्योगों विश्लेषण करती है कि उद्योग किन स्थानों पर केंद्रित होते हैं और कौन से भौगोलिक कारक उनके स्थान और विकास को प्रभावित करते हैं। औद्योगिक भूगोल के अध्ययन के लिए कई दृष्टिकोण हैं, जिनमें व्यवहारवादी, मार्क्सवादी, कट्टरपंथी, पूंजीवादी और औद्योगिक स्थान दृष्टिकोण शामिल

4. संसाधन भूगोल(Social geography) मानव भूगोल की वह शाखा है जो कि आर्थिक भूगोल से संबंधित है। पृथ्वी पर संसाधनों के वितरण, उत्पादन, उपयोग और संरक्षण का अध्ययन करती है। मुख्य रूप से प्राकृतिक संसाधनों जैसे खनिज, जल, वन, और ऊर्जा स्रोतों पर केंद्रित है, तथा इन संसाधनों के प्रबंधन और टिकाऊ विकास पर जोर देती है। जिम्मरमैन ने यह कहा है संसाधन होते नहीं बनाए जाते हैं। संसाधन उन सभी वस्तुओं और सेवाओं को कहते हैं जो मानवीय आवश्यकताओं और इच्छाओं की पूर्ति करती हैं। ये प्राकृतिक, मानव निर्मित या मानवीय कौशल पर आधारित हो सकते हैं। जैसे भूमि, जल, खनिज प्राकृतिक संसाधन हैं, तो इमारतें, मशीनें मानव निर्मित संसाधन हैं और लोगों का कौशल व ज्ञान मानव संसाधन है।

5. परिवहन भूगोल(Social geography) जो पृथ्वी की सतह पर लोगों, वस्तुओं और सूचनाओं की आवागमन, उनके प्रवाह के स्थानिक पहलुओं, और परिवहन के मार्गों के स्थान, संरचना, पर्यावरण और विकास का अध्ययन करती है। यह लोगों, वस्तुओं और सूचनाओं के प्रवाह के वर्णन, व्याख्या और पूर्वानुमान से संबंधित है, तथा आर्थिक विकास, वैश्वीकरण, और शहरी स्वरूपों को भी प्रभावित करता है। परिवहन भूगोल को एक ऐसे अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है जो परिवहन लागत, व्यापार लाभ और तकनीकी परिवर्तनों से प्रभावित लोगों, वस्तुओं और सूचनाओं के प्रवाह का वर्णन, व्याख्या और पूर्वानुमान करता है। यह आर्थिक विकास और वैश्वीकरण से निकटता से जुड़ा है, और शहरी स्वरूप और विकास को प्रभावित करता है।

6. खनिज भूगोल (Social geography) मानव भूगोल की वह शाखा है जो पृथ्वी की सतह पर खनिजों के वितरण, उनके निर्माण और उनके उपयोग का अध्ययन करती है। यह शाखा पृथ्वी की भू–संरचना, खनिज संसाधनों की खोज, उत्पादन और खपत से जुड़ी है। खनिज भूगोल खनिजों से संबंधित आर्थिक गतिविधियां जैसे खनन, व्यापार और निर्यात का भी अध्ययन करता है।